राज मोहन झा

राज मोहन झाक जन्म 27 अगस्त 1934 मे वैशाली जिलाक बाजितपुर गाममे भेल छलनि। मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राज मोहन झाक योगदान उल्लेखनीय अछि। हिनका ई प्रतिभा पितामह जनार्दन झा 'जनसीदन' एवं पिता हरिमोहन झासँ प्राप्त भेल छनि। कौलिक संस्कारक प्रभाव हिनक रचना पर पड़ल अछि। मनोविज्ञानमे एम. ए. कयलाक बाद ई बिहार सरकारक श्रम एवं नियोजन विभागमे पदाधिकारी छलाह, जाहि पदसँ ओ 1994 मे सेवानिवृत भेलाह।

हिनक कथाक वस्तु एवं शैली अन्य कथाकारसँ भिन्न अछि। हिनक पहिल कथा 1957 मे 'पल्लव' पत्रिकामे छपल छनि। हिनक पहिल कथा संग्रह 'एक आदि : एक अन्त' 1965 मे, दोसर कथा संग्रह 'झूठ-साँच', 1972 मे तथा तेसर कथा संग्रह 'एकटा तेसर' 1984 मे छपलनि, हिनक निबन्ध संग्रह 'गलतीनामा', भनहि विद्यापति, टिप्पणीत्यादि आदि बेस चर्चित छनि। आइ काल्हि परसू (1993), अनुलग्न (1996), अभियुक्त विस्थापित निष्कासन इत्यादि -इत्यादि (2003) छपल छनि। 1982 सँ साहित्यिक पत्रिका 'आरम्भक' सम्पादन तथा प्रकाशन केलनि अछि।

हिनका 1986 मे 'वैदेही' पुरस्कार ओ 1996 मे 'आइ काल्हि परसू ' कथा संग्रह पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छनि। 2009 क प्रबोध साहित्य सम्मानसँ ई सम्मानित भेल छथि।

हिनक कथा मध्यम वर्गक पारिवारिक जीवनक व्यथाकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि। निबन्धक आ समीक्षक रूपमे सेहो ई प्रसिद्ध छथि मुदा हिनक कथाकार रूप मुकुट जकाँ शोभित अछि। भोजन कथामे समयक संग बदलैत परिस्थिति, विचार आ रुचिक वर्णन अछि। मनुष्यक नियति कतेक काल-प्रभावित अछि, तकरा ई कथा अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ रखैत अछि।

भोजन

हम भितरका कोठरीमे कल्हुका क्लास लेल नोट तैयार करैत रही, आ ममता ड्राइंग रूममे कापी जाँचि रहल छलि। कने काल बाद ममताकेँ सुनलहुँ रमुआकेँ जोरसँ आदेश दैत- 'खाना भ' गेलौ रे, रमुआ ? भ' गेलौ तँ लगा।'

हमरा छल जे ई आखिरी नोट तैयार क' ली, तहन उठी। जोरसँ बजलहुँ -'हमरा कने ई नोट पूरा क' लेब' दिय'। कोन हड़बड़ी अछि, एखन (घड़ी उठा क' देखलहुँ) साढ़े आठे बाजल अछि।'

'तँ साढ़े आठ अहाँकेँ कम्म बुझाइए ? हमरा भोरे आठे बजे कालेज पहुँचि जयबाक अछि ।'

'हमरो कालिह नौए बजेसँ क्लास अछि।'-हम चिकरलहुँ।

'अहाँकेँ की अछि, अपन आठ बजे उठब। हमरा भोरे उठि सभ किछु करबाक रहैए। नोट पूरा क' लेब अपन खयलाक बाद।'

नहि मानतीह ई। हम किताबकेँ तकियापर उन्टा सुता बाहर अयलहुँ। ममता कापी जाँचिए रहल छलि। कहलिऐ -'वाह, हमरा तँ बन्द करबा देलहुँ, आ अपने पोथा पसारने छी।'

'यैह, जा रमुआ थारी अनैए!' कापीसँ मूड़ी उठौने बिनु ममता बाजलि।

'बेस, हम अहाँकेँ कय बेर कहने छी जे कमसँ कम नौ बाज' दियौ। केओ सभ्य लोक नौ बजेसँ पहिने नइ खाइत अछि।

'तँ नौ तँ बाजिए जायत खाइत-खाइत।' -ममता कापीमे नम्बर चढ़बैत बाजलि।

हम ओकरा आगाँसँ कापी झिकैत कहलिऐ-'नौ बजे माने खा क' उठी नहि , नौ बजे खाय बैसी।'

'अच्छा एक्के बात भेलैं' ममता सोझ होइत बाजलि- 'अहीं जकाँ आठ बजे धरि हमहूँ सूतल नहि रहै छी। हमरा भोरे उठि ...'

'अच्छा एकटा कहू?' -बात कटैत हम कने गंभीर भ' ममताकेँ पुछलिऐ-

'भोरे उठि अहाँकेँ की सभ करबाक रहैए, जखन कि सभटा काज तँ रमुआ करैत अछि ?'

'अहा हा! आ रमुआकेँ भोरे भोर के उठबैत छै ?' ममता चहकैत बाजलि-'एक दिन हम छोड़ि दिऐ तँ ई छौंड़ा तँ और नौ बजे उठत। आ, एक बेर उठौलासँ उठि जाइत ई छौंड़ा, तहन कोन बात छलै। एह, फेर जा क' सूति रहत। एकरा तँ दस बेर उठबियौ तहन जा क' तँ एकर आँखि फुजैत अछि! कय दिन तँ हमरा पानि ढार' पड़ल अछि छौंड़ा पर, तेहन ई अछि।'

हमरा कने अमानुषिक जकाँ लागल। कहलिऐ ममताके -'अहाँ बड़ निरदयी छी। ममता तँ बेकारे अहाँक नाम रखलक, जे केओ रखलक से। अच्छा, के रखलक अहाँक नाम सत्ते ?'

'आब छोड़ू, हमरा नइँ मन अछि के रखलक।' ममता अपन कापीक थाक उठबैत बाजलि। रमुआ पानिक जग आ दू टा गिलास आनि क' टेबुलपर राखि गेल। ई एहि बातक पूर्व सूचना छल जे आब ओ थारी आनत। खाय पड़त।

हम ममताकेँ कहलिऐ - 'अच्छा, अहाँकेँ एना नहि लगैत अछि जे, हमर मतलब अछि, भोजन जे हमसभ करै छी नित दिन, से नहि लगैत अछि जे एकटा यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत क' लैत छी ? माने, अपन आन सभ काज जकाँ ? भोजन काज जकाँ नहि करबाक चाही।'

'वाह, भोजनो तँ एकटा काजे भेलै। काज तँ भेबे केलै ।'

'तेना नहि । हमर मतलब 'भोजन करब' क्रियासँ नहि छल। 'भर्ब' तँ भेबे कैलै। 'वर्क' नहि होयबाक चाही ई। एकरा 'टास्क' बुझि क' नहि कयल जयबाक चाही ।' - हम बुझौलिऐ।

'अच्छा ई सभ फिलॉसॉफी अपन राखू अपनहि लग। अहाँक हिसाबेँ जँ चल' लागी हम तँ भ' गेल! कोनो काजे नहि हो।'

रमुआ थारी राखि गेल। हम एकटा उड़ैत दृष्टि थारीक वृत्तमे दौड़ौलहुँ । बाटीकेँ अपना और लग घुसकबैत हम ममताकेँ पूछलिऐ-'अच्छा, कालिह्यो तँ भरिसक यैह आलू-परोड़ आ रामतरोइक भुजिया बनौने रहय! नहि ?'

ममता रोटीक टुकड़ा तोड़ि दालिमे डुबबैत बाजलि -'तँ और की बनाओत ? आइ-कालिह गनि-गुथि क' यैह तँ तीन-चारिटा तरकारी भेटै छै- भाँटा, करैल आ कि यैह परोड़ आ

रामतरोइ। परोड़ खाइत - खाइत मुदा हमरो मन भरि गेल अछि सत्ते।'

'खाली सैह नहि ने। हमरा तँ लगैत अछि, परोड़क बदला मानि लिय' जे करैले बनबय ई, तैयो हमरा नहि लगै अछि जे स्वादमे कोनो विशेष अन्तर पड़' वला अछि। असलमे बनयबाक एकर जे पद्धति कहू वा प्रक्रिया छैक, से एक्के छै। तँ चाहे परोड़ बनबओ वा करैल, स्वाद एके रंग होइ छै करीब-करीब। किछु हमसभ खाइतो तेना छी, जाहिमे स्वादक प्राय: बहुत स्थानो नहि रहै छै। .... नहि ?'

ममता पानिक घाँट ल' क' बाजलि - आब जे बनबैत अछि बेचारा, बना तँ लैत अछि। हमरा ओते समयो नहि रहैए जे किछु देखाइयो देबै।'

हम मन पार' लगलहुँ जे ममताक हाथक भोजन पछिला बेर हम कहिया कयने रही। नहि मन पड़ल। मन भेल जे ममतेसँ पुछि लिऐक। मुदा तुरंत डर भेल जे एहि बातक ओ आन अभिप्राय ल' लेत।

'आब की सोच' लगलहुँ अहाँ ?' ममता मुँहमे कौर लैत पुछलक।

'नहि, सोचब की ? सोचैत रही जे ई सभ टा निघँटयबाक अछि ।' - हम आगाँक थारी-बाटी दिस इंगित करैत कहलिएक।

'हे, खा लिय' जल्दी । ओकरो छुट्टी हेतइ !' -हमरा देरीसँ चिबबैत देखि ममता टोकलक।

रमुआ दूधक कटोरा ल' क' आयल तँ ममता ओकरा पापड़ सेदि क' आन' कहलकै।

'अच्छा, एना नहि भ' सकैत अछि कहियो जे ..... हम कहैत रही एक दिन जँ एना करी .....'

'कोना करी ?' -ममता टोकि क' हमरा दिस ताक' लागलि।

'असलमे हमर एकटा बहुत दिनसँ इच्छा अछि। इच्छा ई अछि जे एक दिन अहाँ हमरापर जबर्दस्ती नहि करी खाय लेल। हमर जखन मन होयत, माने हमरा जखन खूब भूख लागल, रातिमे एक वा दू बजे, अथवा जखन, तखन खाइत जाइ!' हम प्रस्ताव रखलहुँ।

'हँ आ रमुआ बैसल रहत ता धरि ?' - ममता आँखिमे प्रश्न ल' क' तकलक।

'मानि लिय' ओ अपन खा क' सूति रहत।' हम आँखिमे प्रश्न ल' क' तकलिऐक।

'नहि, हम नहि जागल रहब ता धरि। हमहूँ खा क' सूति रहब। अहाँ लेल परसि क'

राखि देत, अहाँ अपन उठि क' खा लेब जखन मन हो।' - ममता सोझे कन्नी काटि लेलक।

एसगरे खयबाक विकल्प हमर उत्साह ठंढा क' देलक। रमुआ पापड़ सेदि क' ल' अनलक आ हमरसभक गप्प सुन' ठाढ़ भ' गेल। ममता ओकरा कहलकै - 'जो तोहूँ अपन परसि क' ल' ले। खा क' सूत जल्दी, भोरे उठबाक छौ।

हम पापड़ तोड़ि दाँत तर देलहुँ। कुड़कुड़बैत -कुड़कुड़बैत पता नहि हम कोना बहुत दिन पहिलुका देखल गामपरक एकटा दृश्यक आगाँ आबि क' ठाढ़' भ' गेलहुँ। बाबा भोजन पर बैसल छथि, आ मैंयाँ आगाँमे पंखा ल' क' बैसलि छनि। कतेक रास गप्प आ सूचनाक आदान-प्रदान दुनू गोटेकेँ एही मध्य होइन। बाबा बहुत रुचिपूर्वक भोजन करथि। धात्रीक चटनी हुनका दुनू साँझ अनिवार्य छलनि। बाबाकेँ खायल भ' जानि तँ मैंयाँ भूमिपर हाथ रोपैत उठि क' ठाढ़ होथि - 'थम्हू , दही नेने अबैत छी।' हमर बाल-मानस पर ई छवि लगैए बहुत गहीरेँ जा क' अंकित भ' गेल अछि । तेँ हमरा आइयो ओहिना मन अछि। एकटा कारण ईहो भ' सकैत अछि जे बाबाक भोजन करबाक ई दृश्य भोजनक प्रति एकटा आकर्षक स्वाद उत्पन्न करैत अछि। ओहि जमानामे लोक होइतो छल भोजनक प्रेमी। मैंयाँ सभ दिन साँझमे बाबासँ पुछनि- 'आइ की तरकारी बनतै रातिमे ?' आ बाबा कहथिन। खाली तरकारिक नामे नहि, कोना बनतै सेहो कहथिन। जेना, भाटेँ साग द' क' , अथवा सजमनि मुरइ द' क'। .....

हमरा मन भेल जे ई बात ममताकेँ कहिऐक। मुदा हमरा लागल जे एकरा ओ सही परिप्रेक्ष्य मे नहि ल' स्त्री जाति पर पुरुषक आधिपत्य-माने एकरा नारी स्वातंत्र्यक प्रश्नसँ जोड़ि क' देखत। तेँ बात बदलि क' पुछलिऐ - 'अच्छा, अहाँक अपन दादा मन छथि?'

ममता दूधक कटोरा उठा 'सिप' कर' लागल छलि। ओ कने काल हमर आँखि तकैत रहलि, जेना एहि प्रश्नक तात्पर्य बुझबाक प्रयास क' रहल हो। बाजलि - 'हँ, मन छथि। मुदा एखन हमर दादा अहाँकेँ कत' सँ मन पड़ि गेलाह। अहाँ तँ हुनका नहि देखलियनि। अच्छा, मैंयाँ मन छथि ?'

'किए नहि मन रहतीह ? मुदा अहाँ ई सभ फालतू बात की सोच' लगैत छी थारी आगाँमे राखि क' ?'

हम अप्रतिभ भ' गेलहुँ। नीक नहि लागल ममताक 'फालतू' शब्दक प्रयोग । हम पानि पीबि दूधक कटोरा थारीमे आगाँ रखलहुँ।

ममतासँ किछु कहब व्यर्थ छल। ओ अपन दूधक कटोरा शेष क' लेने छलि आ हमर

प्रतीक्षामे बैसल छलि। हम ओकरा उठ' कहलिऐक, मुदा ओ बैसल रहलि। बाजलि जे तखन तँ अहाँ और देरी करब।

कने काल बाद ओ फेर नेहोरा कयलक - 'हे, छुट्टी दियौ ओहू छौंड़ाकेँ। जते जल्दी खयबै, ओकरहु काज होयतै।'

हम बाबाक जमानासँ आगाँ बढ़ि बाबूजीक युगमे आबि गेल रही। बाबा जकाँ ओ सभ दिन कोन तरकारी बनतै, से फरमान तँ नहि जारी करैत रहथिन, मुदा मायसँ पुछथिन जरूर जे आइ की तरकारी बनल अछि ? की तरकारी बनौलीह, से माय अपने निर्णय लेथि। ई भार बाबू जी माय पर छोड़ि देने रहथिन प्राय:। अथवा माय अपनहि ई अधिकार स्वत: ल' लेने रहथि। एक युगमे एतेक प्रगति तँ होबहिक चाही। हम सोचलहुँ, निर्णय जकर ककरो रहैत होइक आ अधिकार चाहे जकर होइक, ई बात छलै जे भोजन एकटा रुचिकर आ आकर्षक वस्तु होइत छलै ताहि दिन। हमरा हँसबाक मन भेल जे आब हमरा सभक युगमे आबि क' ई निर्णयक अधिकार पति आ पत्नीक हाथसँ निकलि नौकरक हाथमे आबि गेल अछि।

हमर ध्यान ममता दिस गेल जे हमर प्रतीक्षामे बैसल छलि। हमरा लागल जे एतीकालसँ हमरापर नजरि गड़ौने ममता हमर मनमे आयल सभटा भाव जेना पढ़बाक प्रयास करैत रहलि अछि। हम कटोरा उठा एके साँसमे बचल सभटा दूध पीबि गेलहुँ।

शब्दार्थ

चहकैत	-	प्रसन्न होइत
अमानुषिक	-	अमानवीय
वृत्त	-	घेरा
धात्री	-	आँवला
परिप्रेक्ष्य	-	परिवेश
आधिपत्य	-	अधिकार

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

निम्नलिखित खाली स्थानक पूर्त्ति करू -

(क) हम कटोरा उठा एके साँसमे बचल सभटा ..... पीबि गेलहुँ।

(ख) हम ..... तोड़ि दाँत तर देलहुँ।

2. निम्नलिखित वाक्यक समक्ष शुद्ध-अशुद्ध लिखू -

(क) रमुआ मालिक छल।

(ख) कथानायकक पत्नी ममता छलीह।

3. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्प अपन उत्तर पुस्तिकामे लिखू-

(i) ममता की करैत छलीह ?

(क) नोट तैयार करैत छलीह (ख) कॉपी जाँचि रहल छलीह।

(ग) पुस्तक पढ़ि रहल छलीह (घ) चिट्ठी लिखैत छलीह।

(ii) ममता रमुआकेँ की आनय कहलैक ?

(क) केरा (ख) भात (ग) दही (घ) पापड़

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) लेखक क्लास लेल की तैयार करैत छलाह ?

(ii) ममता ड्राइंग रूममे की क', रहल छलि ?

(iii) ममता कॉपी पर की चढ़बैत छलि?

(iv) भोजन आइ कोन क्रियाक अन्तर्गत अबैत अछि ?

(v) कथामे ममता छौंड़ा ककरा कहने अछि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भोजन कथाक सारांश लिखू।

(ii) भोजन कथाक उद्देश्य स्पष्ट करू।

(iii) प्राचीन आ आधुनिक भोजनक प्रसंग लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(iv) ममताक चरित्र चित्रण करू।

6. निम्नलिखिते गद्य खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू :

(क) अच्छा, अहाँकेँ एना नहि लगैत अछि जे, हमर मतलब अछि, भोजन जे

हमसभ करैत छी नित दिन, से नहि लगैत अछि जे एकटा यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत क' लैत छी, माने, अपन आन सभ काज जकाँ ? भोजन काज जकाँ नहि करबाक चाही।

(ख) तेना नहि। हमर मतलब' भोजन करब' क्रियासँ नहि छल। भर्ब तँ भेवै कैले। 'वर्क' नहि होयबाक चाही ई ।